देश को ऊंचाईयों की ओर ले जाने का प्रयास करे मीडिया–भनावत

आबू रोड, 22 सितम्बर। शान्तिवन में तीन दिन से चल रहे राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन में सोमवार को द्वितीय खुले सत्र में बदलते हुए परिदृष्य में जन संचार माध्यमों के योगदान पर हुई चर्चा पर अध्यक्षीय टिप्पणी में राजस्थान विश्वविद्यालय पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डा0 संजीव भानावत ने कहा कि मीडिया का ध्यान गुणवत्ता से हटता जा रहा है। मीडिया हथियार भले ही है लेकिन इसका सदुपयोग समाज व देश को ऊंचाईयों की ओर ले जाने के लिए किया जाना चाहिए।

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्व विद्यालय के प्रो0 के0 सी0 मौलि ने कहा कि लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ न की स्थिति यह है कि जनसाधारण मीडिया से घबराने लगा है। अब समय आ गया है कि देवताओं और राक्षसों जैसे आत्म मंथन का इतिहास दोहराया जाये। अमृत के साथ विष भी निकलेगा और उस विष को निगलने के लिए किसी को नीलकंठ बनना पड़ेगा। दैनिक ट्रिब्यून के पूर्व सम्पादक विजय सहगल कहा कि मीडिया की पहचान मिशन से बदलकर कमीशन संस्कृति का हिस्सा बन गयी। आसुरी संस्कारों के साथ–साथ दैवी संस्कार भी दिखायी देने लगे हैं। जिन लोगों का मकसद केवल पैसा बटोरना है बेहतर होगा कि वे पत्रकारिता छोड़कर और धंधा अपना लें। पत्रकारों को कृष्ण के सुदामा बनना होगा तभी बदनामी की गठरी का स्वरूप बदल पायेगा।

प्रधानमंत्री के पूर्व सलाहकार अक्षय कुमार ने कहा कि बदलते परिदृष्य में मनी पावर मीडिया पर हावी होती जा रही है। सही अर्थों में मीडिया अभिमन्यु के समान चक्रव्यूह में फंस गया है। हिम्मत न हारिये का संदेश देते हुए उन्होंने कहा कि कौरवों की संख्या भले ही ज्यादा हो लेकिन इस महाभारत में जीत पाण्डवों की ही होगी। दैनिक संदेश के सलाहकार सम्पादक देवेन्द्र पटेल ने कहा कि मीडिया के माध्यम से ही गांवों की समस्या मंत्री तक पहुंचती है। अन्याय और अत्याचार से पीड़ित आम आदमी को न्याय दिलाने में भी मीडिया सक्षम भूमिका निभा सकता है। अर्जुन की तरह मीडिया भी अपने ही संशयों में घिरा जा रहा है। ज्ञान सागर से बढ़ती हुई दूरी से प्रबुद्ध पत्रकारों का चिन्तित होना स्वाभाविक है। आकाश से किसी सुधारक के धरती पर अवतरित होने की प्रतीक्षा किये बिना प्रत्येक व्यक्ति को चरित्र निर्माण से नये समाज की संरचना में जुट जाना चाहिए।

प्राईम प्वाइंट फाउण्डेशन चेन्नई के अध्यक्ष के श्रीनिवासन ने कहा कि प्रिन्ट व इलेक्ट्रानिक मीडिया के साथ–साथ साईबर मीडिया के विकास का दौर गुजरने के बाद अब सोशल मीडिया का समय आ गया है। देश की एक तिहाई आबादी मोबाईल इस्तेमाल कर रही है। आने वाली पीढ़ी भी संचार माध्यमों के निशाने पर है। व्यवसायीकरण के दौर में आधुनिक तकनीक को अपनाना आवश्यक हो जायेगा। इसी तकनीकी की बात करते हुए प्रो0 प्रदीप माथुर ने कहा कि अमेरिका ऐसे रेडियो विकसित करने की कोशिश कर रहा है जो पांच छः क्लिोमीटर के दायरे में कार्य करेंगे और समाचार पत्रों के जिलावार संस्करणों की तरह रेडियो का क्षेत्र भी एक शहर तक केन्द्रित हो जायेगा।

मीडिया प्रभाग मुम्बई के समन्वयक ब्र0 कु0 निकुंज ने कहा कि बदलते हुए परिवेश में मीडिया को सामाजिक दायित्व की स्थिति को समझना होगा। जब तक हम सामाजिक सरोकारों को साथ नहीं लेगें तब तक हमारी पत्रकारिता अधूरी रहेगी।